

मेघालय देगा देशी सामुदायिक पशु-फार्म को बढ़ावा

चर्चा में क्यों?

मेघालय, जिसने हाल ही में 'मेघालय दूध मशिन' लॉन्च किया है, गाँव के स्तर पर सामुदायिक पशु-फार्मों को विकसित करने और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये साहवािल, गरि, राठी, लाल संधी और थापकर जैसे स्वदेशी पशु नस्लों को शामिल करने की योजना बना रहा है।

प्रमुख बिंदु

- मेघालय जो कदूध की आवश्यकता की पूर्तिके लिये अन्य राज्यों पर नरिभर है, 2022 तक दूध उत्पादन में आत्मनरिभर बनना चाहता है।
- राज्य में दूध की प्रतवि्यक्ता उपलब्धता 83 ग्राम प्रतदिनि है, जो 355 ग्राम के राष्ट्रीय आँकड़े से काफी कम है।
- 2012 की पशुधन जनगणना के अनुसार, मेघालय में लगभग दस लाख मवेशी हैं। इनमें से केवल 30,000 दूध देने वाली गायें (वर्णसंकर) हैं और वे ज़्यादातर दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों के तहत पाली जाती हैं। ये गायें राज्य के कुल दूध उत्पादन में लगभग 60 प्रतिशत का योगदान देती हैं।
- केंद्रीय कृषि मंत्रालय के अनुसार, राज्य के 6,449 गाँवों में से केवल 97 गाँवों में ही दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियाँ थीं।

सामुदायिक पशु-फार्म

- राज्य के सभी ज़िलों में पर्याप्त खुली जगह की उपलब्धता के कारण मेघालय के लिये सामुदायिक पशु-फार्म व्यवहार्य हैं।
- गाय, मुक्त समूह में वचिरण करने वाली प्रकृति की एक पशु प्रजाति है, अगर उन्हें स्वतंत्र रूप से वचिरण करने की अनुमति दी जाए तो उनके दूध की गुणवत्ता बढ़ जाती है। अगर उन्हें चारों ओर वचिरण करने की पर्याप्त सुविधा दी जाए तो उनकी प्रतरिकषा भी बढ़ जाती है।
- पशुओं के एक ही स्थान पर उपलब्ध होने पर पशु चिकित्सा सेवाओं की व्यवस्था करना आसान और सस्ता हो जाता है। इसके अलावा, सामुदायिक पशु-फार्मों में छोटे और सीमांत किसानों के समक्ष आने वाली भूमिसिंधी समस्याओं के समाधान का भी प्रयास किया जाएगा।
- यह मशिन साहवािल, गरि, राठी, लाल संधी और थापकर जैसे स्वदेशी नस्लों को विकसित करने पर ज़ोर देता है। इस मशिन के तहत राज्य सरकार द्वारा 2,000 किसानों को 10,000 गायें उपलब्ध कराए जाने का वचिर है।

दुग्ध संघ

- वर्तमान में मेघालय अपनी डेयरी संबंधी मांग को पूरा करने के लिये पुराबी (असम से) और ताजा (अमूल से) जैसे डेयरी ब्रांडों पर नरिभर है। यह मशिन डेयरी उत्पादों की मांग के एक हस्से की पूर्तिकरेगा।
- यहाँ केवल तीन ज़िला स्तरीय दुग्ध सहकारी संघ जयंतिया हलिस, वेस्ट गारो हलिस और पूर्वी खासी हलिस में हैं। इसका लक्ष्य मशिन की अवधकी समाप्तिक सभी 11 ज़िलों में अपने स्वयं के दुग्ध संघ स्थापति करना है।
- 'मेघालय दूध मशिन' में भी संभावति दुग्ध संग्रह केंद्रों पर 79 कूलर मशीनें (प्रत्येक की क्षमता 500 लीटर) स्थापति करने और 13 दूध टैंकरों (प्रत्येक की क्षमता 3,000 लीटर) की खरीद करने का प्रस्ताव है।

मेघालय दूध मशिन

- दूध की मांग और आपूर्तिके बीच अंतर को कम करने के लिये हाल ही में 215 करोड़ रुपए की इस योजना को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया।
- इस योजना से केंद्र की 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य को पूरा करने में सहायता मिलेगी। अगले चार वर्षों में लगभग 2000 किसान इस योजना से प्रत्यक्ष रूप से लाभावति होंगे।
- इस परियोजना में 2000 डेरी फार्म इकाइयाँ शामिल हैं, प्रत्येक इकाई में 4 गायें खरीदने की व्यवस्था है। इसके अतरिकित शेड नरिमाण, स्टोरेज कक्ष, पशु बीमा, दूध के टैंकर, मलिक कूलर भी शामिल हैं। साथ ही किसानों के लिये 1 करोड़ रुपए की लागत से प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की जाएगी।

